International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.12 No.3 January – February 2025

समकालीन हिंदी कविता के सशक्त हस्ताक्षर: दामोदर खड़से

डॉ. सोमनाथ पंडितराव वांजरवाडे
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
विवेकानंद महाविद्यालय, छत्रपति संभाजीनगर
Corresponding Author - डॉ. सोमनाथ पंडितराव वांजरवाडे

DOI - 10.5281/zenodo.22670217

"मानव होना भाग्य है,
कवि होना सौभाग्य ।"...नीरज

नीरज की यह पंक्ति इस बात को प्रमाणित करती है कि मानव और कवि कितने अहम और सौभाग्य की बात है। इन्हीं मानव और कवि याने भाग्य-सौभाग्य का संगम है-दामोदर खडसे। जो पिछले तीन-चार दशकों से साहित्य की दुनिया में चुपचाप बहती नदी की तरह साधनारत है। दामोदर खडसे की कविताओं पर गौर करेंगे तो यह पाएंगे कि वह एक अत्यंत संवेदनशील कवि हैं। इस कठिन दौर में सामाजिक सच्चाई, विसंगतियाँ, विषमताएँ, विद्रूपताएँ लिए हुए भी समूचे सृष्टि को बचाने का एक भरसक प्रयास करते हुए दिखाई देते हैं। दामोदर खडसे हिंदी साहित्य के एक महत्वपूर्ण कवि हैं। जिनकी कविताएं सपनों और संभावनाओं से भरी हुई हैं। अपने समय और समाज के यथार्थ को टकराते हुए जिन समस्याओं का साक्षात्कार किया है, अनुभव किया जिसका समाजशास्त्रीय दृष्टि से अध्ययन किया जाता है, उस अनुभूत समस्याओं को दामोदर खडसे ने अपने कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। दामोदर खडसे की कविताएं व्यक्ति और समाज की भावनाओं संभावनाओं का एक जीवन और मोहक कोलाज है।

दामोदर खडसे ने समाज के अलग-अलग पक्षों को केंद्र में रखकर कविताएं लिखी हुई हैं। कुछ कविताएं सामाजिक सच्चाईयों का विद्रूप चेहरा दिखाती है। यह केवल समस्याओं को ही व्यक्त नहीं करते हैं बल्कि समाधान भी प्रस्तुत करते हैं खडसे जी की कविताओं में समय, समाज, व्यवस्था, मनुष्य की मनोवृति, प्रेम, प्रकृति, लोक, संस्कृति, आत्मबल, विश्वासघात, निराशा, जिंदादिली, मोहभंग और आशावादिता के विपरीत रंगों को पूरी ईमानदारी से संजोया है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि, दामोदर खडसे ने अपनी कविता के माध्यम से समाज और समय को खंगालने का प्रयास किया है। इनकी कविताएं कैनवास का एक व्यापक फलक तैयार करती है। इनकी कविताएं छोटी बड़ी कविताओं की एक पोटली है, एक पोस्टमैन की गठरी की तरह है जिसमें सुख-दुख की कई घटनाएं रंग देखने को मिलते हैं।

कविताओं का सामाजिक अर्थ और अभिप्राय यथार्थवाद की मदद से समझा जा सकता

है। मैनेजर पाण्डेय के शब्दों में कहें तो –"कविता में जीवन-जगत के यथार्थ और अनुभव की अभिव्यक्ति केवल प्रातिनिधिक रूप में नहीं होती है, प्रतीकात्मक ढंग से होती है। कविता जिंदगी की ठोस सच्चाईयों को मूर्त रूप में देखती-दिखाती है, वह व्यक्ति के अनुभवों को महत्व देती है। उसकी चिंता का विषय केवल समाजशास्त्र का वह 'सामाजिक' नहीं होता जो विभिन्न संस्थाओं, संरचनाओं, संबंधो और नियमों आदि से निर्धारित और परिभाषित होता है। कविता की दिलचस्पी जीवन के व्यक्तिगत से लेकर मानवीय पक्षों तक फैली होती है। उसकी इसी व्यापकता में, व्यक्तिगत और मानवीय के बीच में कहीं 'सामाजिक' भी स्थित होती है। कविता के इसी प्रातिनिधिक और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति को प्रकारांतर से कविता के मर्म को समझने- समझाने के लिए कविता का समाजशास्त्रीय अध्ययन आवश्यक है।"[1]

अत: पिछले तीन-चार दशकों से साहित्य के क्षेत्र में साधनारत दामोदर खडसे ने भी जीवन के व्यक्तिगत से लेकर मानवीय पक्षों को लेकर सामाजिक यथार्थ को लेकर कई कविताओं का सृजन किया है। इनमें - अब वहां घोंसले हैं, जीना चाहता है मेरा समय, सन्नाटे में रोशनी, तुम लिखो कविता, अतीत नहीं होती नदी, रात आदि कविता संग्रह प्रमुख हैं।

'अब वहां घोंसले हैं' यह दामोदर खडसे का ई.स. 2000 में प्रेरणा प्रकाशन, पुणे से प्रकाशित एक महत्वपूर्ण कविता संग्रह है। जिसमें हमारे समाज जीवन के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, परिदृश्य और उनके चुनौतियों की प्रतिध्वनियाँ हैं। जिसमें पिता की और अपनी नौकरी के कारण स्थानांतरण की वजह से शहर दर शहर की यात्रा में आसपास के घटते हर ताने-बाने को समझते हुए समूचित सामाजिक चरित्र को विभिन्न रंगों के साथ हमारे सम्मुख रखा है। बदलता सामाजिक जीवन हालांकि परिवर्तन के सृष्टि के नियम को जो इंसानी रिश्तो में परिवर्तन की उम्मीद या अपेक्षा नहीं होती है लेकिन दुर्भाग्य से समय के साथ जहां स्वार्थ, लालसा की अंधी दौड़ के कोहराम में परिवर्तन हुआ है। परिणाम स्वरूप सामाजिक चरित्र का पतन हुआ है और हो रहा है।

पिछले तीन-चार दशकों की सामाजिक स्थिति, परिस्थिति और परिदृश्य को गुण दोषों के साथ कविताओं के माध्यम से दामोदर खडसे ने रखा है। नगरों, महानगरों को तमाम सारी विसंगतियों, विषमताओं और विद्रूपता के साथ हताशा-निराशा और जिजीविषा के साथ अभिव्यक्त किया है। सभी मानवीय संबंधो और घटनाओं की गहरी जाँच पड़ताल करती है इनकी कविताएँ। 'अब वहाँ घोंसले हैं' इस काव्य संग्रह की पहली कविता है 'मेरा मौन मेरा एक कारण' जिसमें राजनीति के बदलते रंग रूप और स्वरूप को बड़ी बेबाकी के साथ चित्रित किया है। समाज और समाजशास्त्रीय दृष्टि से जो राजनीति लोकतंत्र का एक मजबूत स्तंभ है, वह किस तरह अपना रंगरूप बदल रहा है। जिसमें इंसानों की सच्ची और पवित्र भावनाएं भी कैसे विज्ञापन और प्रामाणिकता के या अप्रामाणिकता के दायरे में आ जाती है । इसी के जरिए कुछ स्वार्थी राजनीतिक लोग फायदा उठाकर ऊपरी सीढ़ियों तक पहुंच जाते हैं इसी को व्यक्त करते हुए खडसे कहते हैं-

"आजकल मैं अपना दुख
खुलकर बयान करने से
कतराता हूं,
ना जाने किसी
ढेले के नीचे छिपा हो कोई नेताई बीज़
जो मेरे आंसुओं की उष्मा पाकर
फलेगा-फूलेगा
और चिल्लाते चिल्लाते
पहुंच जाएगा किसी विधानसभा
या की संसद में..." [2]

वहीं पर बदलते राजनीतिक परिदृश्य और मूल्यों के ह्रास को व्यक्त किया है। 'सुकरात के बेटे' कविता में बदलते सामाजिक समीकरण और उसके यथार्थ को चित्रित करते हुए हैं लिखते हैं-

"सुकरात के बेटे, आज भी
ईमान, हाथ में लेकर आते हैं
बेचारे,जहर से नहीं, भूख से मर जाते हैं!" [3]

बदलते राजनीतिक समीकरण जो आज किस कदर राजनीति लोगों पर हावी हो गई है। कुछ लोगों के लिए साध्य और साधन बनी हुई है। स्वार्थ सिद्धि के परिणामस्वरूप राजनीति चुनाव, सभाएं और आम लोग इनका परिदृश्य ही बदल गया है उसी बदले हुए राजनीतिक परिदृश्य को चित्रित करते हुए खडसे 'वांटेड' कविता में लिखते हैं-

"एक अंधी भीड़ चाहिए,
चुनाव जीतने पर
झुकी हुई
रीढ़ चाहिए।"[4]

दामोदर खडसे ने राजनीतिक असंगतियों, विषमताओं पर प्रहार किया है। उनकी कविताएं राजनीतिक चेतना से परिपूर्ण एक सशक्त अभिव्यक्ति है। जिसमें उन्होंने आजादी के बाद लोगों के मोहभंग को चित्रित करते 'काक संवाद' नामक कविता में लिखते हैं -

"आजाद हुए तो क्या हुआ,
गिद्ध गए और चील आयी...
जंगल में उसने भयानक
दहशत फैलायी,
अपनी नुकीली चोंच से
एक योजना बतायी..."[5]

खडसे की कविताओं में समकालीन राजनीतिक परिवेश अपनी वास्तविकता के साथ प्रतिबिंबित हुआ है। कवि की राजनीतिक चेतना दिखाई देती है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखा जाए तो जिस लोकतंत्र को हमने अपनाया है वह आदर्शों का पुंज माना जाता है। लोक ही जिसका मूलाधार होता है, जनता के प्रति उत्तरदाई शासन व्यवस्था निरपेक्ष या विशुद्ध है? इस सवाल का उत्तर दामोदर खडसे ने राजनीति के बदलते चेहरे को यथार्थ के रूप में अभिव्यक्ति ही नहीं दी है, बल्कि राजनीति के पतन, गिरते चरित्र और राजनीति में व्याप्त विसंगतियों को, उसके षड्यंत्र को उजागर करते हुए लिखा है -

"राजभवन की ईंटों से
ख़िदखिदाने की
कुटिल आवाजें आ रही है...।"[6]

देश में या समाज में व्याप्त मानव जनित ज्यादातर समस्याएं संकीर्णतापूर्ण स्वार्थ से प्रेरित राजनीति का ही परिणाम है। राजनीति और लोकतंत्र की हकीकत को बयान करते हुए लिखा है-

"अब,
हर आदमी तुम्हें
नंगा, आदिम और गंवार लगने लगा
भूख और सिर्फ भूख के इर्द-गिर्द, मंडरानेवाला...।"[7]

देश के युवाओं का मोहभंग और उनकी बेरोजगारी को दामोदर खडसे ने आज के परिदृश्य को उनकी विसंगतियों को विशेष रुप से आज की जो सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी को और आज के युवाओं के मोहभंग की तस्वीर पेश करते हुए देश वर्तमान कविता में कहते हैं-

"मैंने गोल्ड मेडल के साथ, डिग्रियां ली
मेरे देश ने मुझे, आधी पगार पर मास्टरी दी...
×××
फिर मैंने
यूनिवर्सिटी बंद करवाने की, लीडर की
मेरे देश ने मुझे, एजुकेशन मिनिस्ट्री दी...।"[8]

दामोदर खडसे अपनी इन कविताओं के जरिए समाज में हर स्तर पर हो रहे शोषण की महीन संरचना को और उस व्यवस्था की चक्की में पीस रहे युवाओं के वर्तमान परिदृश्य को चित्रित करते हुए बेरोजगारों की व्यथा कहते हैं -

"बेकारी से तंग आकर
मैंने फुटपाथी दुकान सजाई...।"[9]

आज के आधुनिक कहलाने वाले दौर में बढ़ती हुई बेरोजगारी और आबादी जैसे जीवन और भैयावह सवालों को भी 'मेरी आंखें' कविता के माध्यम से उपस्थित करते हुए लिखते हैं -

"मेरी आंखों के सामने, प्रश्नों की
ये लंबी लंबी कतारें
मेरी आंखें न हुई
रोजगार दफ्तर की, खिड़कियां हैं।"[10]

दुनिया के सबसे बड़े कहलानेवाले लोकतंत्र भारत जिसने आज़ादी के लिए सबसे लम्बी लड़ाई और संघर्ष, बलिदान और शहादत के बाद वहीं आज़ादी मिली। आजादी के पश्चात आजादी के लिए अपना संपूर्ण समर्पण देने वाले लोगों के मोहभंग और बदलती परिस्थितियों के ऊपर प्रहार करते 'देश वर्तमान' कविता में लिखते है -

"स्वतंत्रता के लिए मैं
ताउम्र जेलों में सड़ा
बावजूद इसके
"हजार रूप रूपल्दी" पेंशन पर
संतोष करना पड़ा।"[11]

राजनीति के गिरते स्तर के लिए जिम्मेदार पहलुओं को कविता में बड़े बेबाकी के साथ व्यक्त किया है। वहीं इसी कविता में नेताओं की चापलूसी और उनके भक्तों की स्थिति को जो चित्रित करते हुए लिखा है-

"स्वतंत्रता के बाद
एक नेता के लिए
एक दिन जेल गया
मेरे नेता ने मुझे
कैबिनेट मंत्री बना दिया।"[12]

रोटी, कपड़ा और मकान इन मूलभूत आवश्यकताओं को जुटाने में संघर्ष कर रहे जूझ रहे लोगों को उनके भूख को कैसे गौरवान्वित किया जाता है। इस पर व्यंग्य करते हुए 'रोजी रोटी' कविता में लिखते हैं -

"उसने भूख पर
बहुत लिखा,

बहुत कहा।
गौरवान्वित हुई भूख
और पुरस्कृत हुआ " भूखा "
फाइव स्टार होटल में।"[13]

आज के आधुनिक दौर में जहां जीवन के सारे समीकरण बदल गए हैं। वहां पर जिंदगी के घनघोर आपाधापी में रिश्तो के समीकरण भी बदले हुए नज़र आते हैं। रिश्तों के बदलाव को उसके यथार्थ को जो आज के दौर की विडंबना है। उस विडंबना को व्यक्त करते हुए खडसे 'बाढ़' कविता में लिखते हैं-

"सुनो,
रिश्तों में भी कभी-कभी ऐसा होता है
पता नहीं क्या है-
जो आदमी को बाढ़ की तरह दौड़ाता है
और उसी आंखों से विप्लव दिखाता है।"[14]

स्वार्थ के पैरों पर खड़ी इस दुनिया में रिश्तो की अहमियत दिन-ब-दिन कम होती जा रही है। जैसे-जैसे हम आधुनिक होते जा रहे हैं वैसे-वैसे हमारे रिश्ते भी सीमित हो रहे हैं, सिमटते जा रहे हैं। इसे 'एकतरफा संवाद' कविता में व्यक्त करते हुए लिखते हैं -

"रिश्ते भी कितने सीमित हो जाते हैं
लंबी सड़क की ढलान तक आते आते।"[15]

उसी कविता में कैसे रिश्तो के होते हुए भी रिश्तों की और एक शाम कैसे सलीब पर टंग जाती है उसको भी उसके अकेलेपन के साथ चित्रित किया है। 'एकतरफा संवाद' नामक कविता में दिन और रातें कैसे बिताने पर मजबूर हो रहे हैं, उसको बयान करते हुए लिखते हैं -

"रिश्तो की तलाश में
रात का तीसरा प्रहर
रह-रहकर जहर लग रहा था...।"[16]

आज के परिप्रेक्ष्य में व्यक्ति और उसके जीवन को जो खेतों, कारखानों और दफ्तरों से आंखें समेट कर घर की ओर बहते आदमी को भी अपनी कविता 'नदी का उद्गम नहीं खोजते' के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं-

"मैं सिर्फ आदमी रह गया- आदिम
शब्दविहीन, भाव पूरित।"[17]

हमारे आज के समय की वास्तविकता पहले के मुकाबले कहीं ज्यादा नृशंस, जटिल और नाटकीय हो गई है । जिसको बेनकाब करते हुए 'अन्यमनस्क' कविता में लिखते हैं-

"इस कोहरे में तुम,
तुम्हारा शहर ही नहीं
सूरज भी गायब है...।"[18]

दामोदर खडसे की कविताओं से गुजरते हुए आधुनिक नगर, महानगर के कृत्रिम जटिल संसार,उसके बदलते सामाजिक संदर्भ का एहसास होता है । हमारे समय, बदलते सामाजिक यथार्थ, परिदृश्य, आशा – निराशा, सुख- दुख, विद्रूपताओं, विषमताओं, असमानता के साथ ही एक आशावाद भी देखने को मिलता है ।

संदर्भ:

1. मैनेजर पाण्डेय,साहित्य और समाजशास्त्रीय दृष्टि, पृ.243
2. दामोदर खडसे, अब वहां घोंसले हैं, पृ. 7
3. वहीं पृ. 9

4. वहीं पृ.16
5. वहीं पृ.20
6. वहीं पृ.32
7. वहीं पृ.39
8. दामोदर खडसे, अब वहां घोंसले हैं, पृ.24
9. वहीं पृ.25
10. वहीं पृ.24
11. वहीं पृ.28
12. वहीं पृ.28
13. दामोदर खडसे, अब वहां घोंसले हैं, पृ.12
14. वहीं पृ.51
15. वहीं पृ.69
16. वहीं पृ.67
17. वहीं पृ.76
18. वहीं पृ.65